मौलिक सौन्दर्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सुन्दरता सबको प्रिय है। कुरूपता कोई नहीं पसंद करता। सौन्दर्य बाह्य और आन्तरिक दो प्रकार का है। बाह्य सौन्दर्य का सम्बन्ध भौतिक जगत से है। मानव की सुन्दरता, स्त्री की सुन्दरता इत्यादि सुन्दरता को और अधिक बढ़ाने के लिए सौन्दर्य प्रसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। स्त्रियां अपनी साज सज्जा करने के लिए, सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए आभूषणों और अनेक प्रकार के कृत्रिम प्रसाधनों का प्रयोग करती है। प्रसाधन के कृत्रिम उपक्रम सौन्दर्य को बढ़ाने में थोड़े सहायक अवश्य होते है किन्तु इनका स्थायी मूल्य नहीं है। मूल सौन्दर्य आन्तरिक सौन्दर्य होता है। इसकी अभिव्यक्ति होने पर व्यक्तित्व में रूपान्तरण हो जाता है। ईश्वर का बनाया हुआ यह जगत सत्यं, शिवं और सुन्दरम् से युक्त है। प्रकृति के सभी उपादान अपने मूलरूप में इतने सुन्दर हैं कि आगन्तुकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेते है। भारत की प्राकृतिक सुषमा अवर्णनीय है। छः ऋतुओं का होना केवल भारत में ही पाया जाता है। मौसम के अनुरूप यहां वेशभूषा भी परिवर्तित होती रहती है। प्रकृति ने भारत को मौलिक रूप से वह सौन्दर्य प्रदान किया है कि वैसा सौन्दर्य विश्व के किसी भी देश में नहीं है। देवता लोग भी इसकी प्रशंसा में गीत गाते है। हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा को सुशोभित कर रहा है। भारत को तीन दिशाओं से सागर की उत्ताल तरंगे इसका पाद प्रक्षालन करने के लिए तैयार रहती है। कहीं–कहीं उच्चे पर्वत और पठार तो कहीं नदियों की अजस्र धाराएं इस देश के वक्षस्थल को सुशोभित कर रही है। कबीरदासजी ने लिखा हैं कि–

बुरा जो खोजन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजैं आपना मुझसे बुरा न कोय।।

अपने भीतर के दोषों को सुधार करना सबसे बड़ी बात है। हमारा यह चिंतन होना चाहिए कि जगत निर्दोष सब मेरा दोष। जो भीतर से शुद्ध होता हैं उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है। भाव शुद्धि के साथ–साथ विचार की शुद्धि भी आवश्यक है। इससे अन्तःकरण की शुचिता बढ़ती है।

जीवन में कमलवत् रहना चाहिए। जगत् में रहते हुए जगत् के पदार्थों से निर्लिप्त रहना चाहिए। जैसे कमल कीचड़ में रहता है लेकिन कीचड़ का कोई भी प्रभाव कमल पर नहीं पड़ता वैसे ही जो मानव इस संसार में रहता है उसी का रहना सार्थक है। मनुष्य और पशु में विवेक का अन्तर है। जिस मनुष्य में ज्ञान, वैराग्य, शुचिता और चारित्र की प्रधानता होती है उसका जीवन निर्मल और उसकी भाव धारा पवित्र होती है। जगत में रहते हुए जो साधक अपना जीवन ईश्वर से जोड़ लेता है उसकी बुराई दूर हो जाती है। मौलिक सौन्दर्य भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसको सत्यं शिवं सुन्दरम् के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जहां पर सत्य रहता है वहां पर शिव रहेगा और जहां शिव रहेगा सुन्दरता वहां अपने आप रहेगी। सत्यं का अर्थ है सत्य। ईश्वर को सत्य कहा गया है। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सत्य के सिवा इस संसार में जितनी भी वस्तुएं है सब औपाधिक हैं। यह संपूर्ण सृष्टि ईश्वर के द्वार रचित है। इसमे सत्य समाया हुआ है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार सभी प्राणी इस संसार में जन्म लेते हैं और कर्मों का भोगकर यथास्थान चले जाते हैं। इसलिए मानव को सत्कर्म ही करना चाहिए। सत्कर्म करने से यह लोक तो सुधरता ही है परलोक भी सुधर जाता है। महापुरुषों का जीवन सत्य से अनुप्राणित है। महात्मा गांधी ने अपने जीवन में सत्य अहिंसा का पालन किया। सत्य और अहिंसा के द्वारा उन्होंने देश को आजाद करा दिया। सत्यं शिवं और सुन्दरम् जब व्यवस्था में आ जाता है तो रामराज्य का अवतरण होता है। रामराज्य का मतलब है जहां पर किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का कष्ट न रहे। सभी समता मूलक जीवन जिये। जीवन में सत्यं शिवं और सुन्दरम् लाने के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय की कल्पना की गई है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष जीवन के चार पुरुषार्थ हैं। धर्म के द्वारा सत्कर्मों का अर्जन किया जाता है। अर्थ के द्वारा जीवन सुचारु रूप से चलाया जाता है। काम के द्वारा मन को संतुष्ट कर इच्छाओं की पूर्ति की जाती है।

मोक्ष जीवन का अंतिम पुरुषार्थ है। प्रत्येक प्राणी चाहे वे सदाचारी हो या दुराचारी उसकी इच्छा यही रहती है कि हमें मोक्ष प्राप्त हो। किन्तु जो सत्कर्म करता है, जो सत्यं शिवं सुन्दरम् का पालन करता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है। सत्य जीवन का सार है। यह जीवन के लिए अमृत तुल्य है। शिव का अर्थ है कल्याण। देवताओं में भगवान् शिव कल्याण करने के

देवता माने जाते है। किन्तु उन्हें संहार का भी देवता माना जाता है। जो सत्य का आचरण करता है उसके लिए तो वे मंगल प्रदाता हैं, किन्तु जो असत् का आचरण करता है उसके लिए वे संहार कर्ता भी हैं। सत्यं शिवं सुन्दरम् की त्रिवेणी में जो स्नान करता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है। अहिंसा, संयम और तप के द्वारा जीवन को नैतिक बनाना चाहिए। किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सभी से प्रेम का बर्ताव करना चाहिए। संयम जीवन को नियन्त्रित करता है। कहा गया है– संयमः खलु जीवनं अर्थात् जीवन में संयम का बहुत बड़ा महत्व है। मौलिकता शाश्वत तत्व है, कृत्रिमता अल्पकालिक अतः जीवन में श्रेय चाहने वालों के लिए शाश्वत तत्व ही आधेय है।